

M.A. - I (Pali and Prakrit)(with Credits)-Regular-Semester 2012 Sem I  
**MAPAL114-4 - Paper IV : Suttapitak And Bhasha Vigyan (Old)**

**सुत्तपिटक आणि भाषाविज्ञान**

P. Pages : 2

Time : Three Hours



\* 3 7 7 7 \*

**GUG/W/16/2911**

Max. Marks : 80

- सूचना :-
1. स्वीकृत माध्यमात उत्तरे लिहा.  
स्वीकृत माध्यम में उत्तर लिखिए।
  2. सर्व प्रश्न अनिवार्य आहेत.  
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

- 1.** ससंदर्भ भाषांतर करा कोणतेही दोन. 20  
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए। कोई भी दो।

- 1) अतिकांत अंतरं बहूनि वाससतानि वठितो एवं प्राणारंभो विहिंसा च भूतानं यातीसु असंप्रतिपति ब्राह्मणसमणानं असंप्रतीपती। तं अज देवानंप्रियस प्रियदसिनो राजो धमंचरणेन थेरीघोसो अहो धम्मं घोसो विमानदसणा च हस्तिदसणा च अगिखंद्यानि च अजानि च दिव्यानी रूपानि दसयित्वा जनं यारिसे बहूहि वाससतेहि न भूतपुरे तारिसे अज वढिते देवानंप्रियस प्रियदसिनो राजो धमानुसस्त्या अनारभो प्राणानं अविहोसा भूतान यातीनं संपटिपतो ब्रह्मणसमणानं संपटिपती मातरि सुसुसा थैरसुसुसा। एस अजे च बहुविधे धमंचरणे वढिते। वढयिसति चेव देवानंप्रियो प्रियदसि राजा धमंचरणं इदं। पुजा च पोजा च प्रपोजा च देवानंप्रियस प्रियदसिनो राजो प्रवधयिसंति इदं धमंचरणं आव सवटकपा धमस्मि तिस्तो धमं अनुसासिसंति। एस हि सेस्टे कंमे य धमानुसासनं। धमंचरणे पि न भवति असीलस त इयम्हि अथस्मि वधी च अहीनो च साधु एताय अथाय इदं लेखापितं इमस अथस वधि युजंतु हीनि च नो लोचेतव्या। द्वादस वासाभिसितेन देवानंप्रियेन प्रियदसिना राजा इदं लेखापितं।
- 2) इयं धमलिपी देवानंप्रियेन प्रियदसिना राजा लेखापिता। इधं न किंचि जीवं आरभित्वा प्रजूहितव्यं। न च समाजो कतव्यो। बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानंप्रियो प्रियदसि राजा। अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमता देवानंप्रियस प्रियदसिनो राजो। पुरा महानसम्हिं देवानंप्रियस प्रियदसिनो राजो अनुदिवसं बहूनि प्राणसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय से अज सदा अयं धमलिपी लिखिता ती एव प्राणा आरभरे सूपाथाय द्वो योरा एको मगो सो पि मगो न ध्रुवो। एते पि जी प्राणा पछा न आरभिसरे।
- 3) देवानंपिये पियदसि लाजा अहा। कयाने दुकले। ए आदिकले कयानसा से दुकलं कलेति स ममया बहू कयाने कटे। ता ममा पुता चा नताले चा पलं चा तेहि ये अपतिये मे आवकपं तथा अनुवरिसंति से सुकर कछंति ए चु हेता देसं पि हापयिसति से दुकटं कछंति। पापे हि नामा सुपदालये। से अतिकंतं अतलं नो हुतपुलुव धमंमहामता नामा। तेदसवसाभिसि तेना ममया धमंमहामाता कटा. ते सवपासंडेसु वियापटा धमांधिथानाये चा धंपवढिया हिद सुखाये वा धमंयुतसा योनकंबोजगंधालानं ए वा पि अने अपलंता भटययेसु बंभनिभेसु अनथेसु वुधेसु हिदसुखाये धमंयुतावे अपलिबोधाये, वियपटा ते बंधन बधसा पटिविधानाये अपलिबोधाये मोखाये चा एयं अनुबंधा पजाव ति वा कटाभिकाले ति वा महालके ति वा वियापटा ते।

- 2. अ)** शिलालेखाच्या आधारे सम्राट अशोकाचे जनकल्याणकारी कार्य स्पष्ट करा.  
शिलालेख के आधार पर सम्राट अशोक के जनकल्याणकारी कार्य स्पष्ट कीजिए। 10

**OR / अथवा**

सम्राट अशोकाचे बुद्धधम्माला योगदान.  
सम्राट अशोक का बुद्धधम्म को योगदान।

- ब) टिपणे लिहा कोणतेही एक.
- 1) अशोक कालीन बुद्धमय भारत  
अशोक काल का बुद्धमय भारत।
  - 2) अशोकाची धर्मयात्रा  
अशोक की धर्मयात्रा।
  - 3) जनकल्याणकारी सप्राट अशोक  
जनकल्याणकारी सप्राट अशोक
3. संसंदर्भ भाषांतर करा.  
संसंदर्भ अनुवाद कीजिए। 15
- एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन आयस्मा पिलिन्दवच्छो भिक्खू वसलवादेन समुदाचरति। अथ खो सम्बहुला भिक्खू येन भगवा तेनुपसङ्गमिंसु, उपसङ्गमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिसु। एकमन्तं निसिन्ना खो ते भिक्खू भगवन्तं एतदवोचुं - 'आयस्मा, भन्ते पिलिन्दवच्छो भिक्खू वसलवादेन समुदाचरती' ति। अथ खो भगवा अङ्गतरं भिक्खुं आमन्तेसि - 'एहि तं, भिक्खू, मम वचनेन पिलिन्दवच्छं भिक्खुं आमन्तेहि - 'सत्था तं, आवुसो पिलिन्दवच्छं, आमन्तेती' ति। 'एवं, भन्ते', ति खो सो भिक्खू भगवतो पटिस्सुत्वा येनायस्मा पिलिन्दवच्छो तेनुपसङ्गमि; उपसङ्गमित्वा आयस्मन्तं पिलिन्दवच्छं एतदवोचं 'सत्था तं, आवुसो पिलिन्दवच्छ, आमन्तेती' ति।
- OR / अथवा**
- एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा उरवेलायं विहरति नज्जा नेरज्जराय तीरे बोधिरक्खमूले पठमाभिसम्बुद्धो। तेन खो पन समयेन भगवान् सत्ताहं एकपल्लङ्गेन निसिन्नो होति विमुत्तिसुख पटिसंवेदी। अथ खो भगवा तस्स सत्ताहस्स अच्ययेन तम्हा समाधिम्हा वुद्धित्वा बुद्धचक्रखुना लोकं वोलोकेसि। अददसा खो भगवा बुद्धचक्रखुना वोलोकेन्तो सत्ते अनेकेहि सन्तापेहि सन्ताप्यमाने अनेकेहि च परिळाहेहि परिरङ्गमाने राजगेहि पि दोसजेहि पि मोहजोहि पि। अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा तायं वेलायं इमं उदानं उदानेसि -
- 'अयं लोको सन्तापजातो, फस्सपरेतो रोगवंदति अत्ततो।  
येन येन हि मञ्जति, ततो तं होति अञ्जथा।  
अञ्जथाभावी भवसत्तो लोको,  
भवपरेतो भवमेवाभिनन्दति।  
यदभिनन्दति तं भयं, यस्स भायति तं दुर्क्खं ॥  
भवविप्पहानाय खो पनिदं ब्रह्मचरियं वृस्सति॥'
4. पालि भाषेच्या विकासाची रूपरेषा सांगा.  
पालि भाषा के विकास की रूपरेषा बताईए। 10
- OR / अथवा**
- भाषाविज्ञानाच्या दृष्टीकोनातून लोकभाषा व साहित्यभाषा अंतर स्पष्ट करा.  
भाषाविज्ञान के दृष्टीकोनसे लोकसभा और साहित्यभाषा अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. अ) टिपणे लिहा कोणतेही दोन.  
टिप्पणियाँ लिखिए कोई भी दो। 10
- 1) उदान
  - 2) नंदसुत्त
  - 3) अशोकाची निर्दोष शासनप्रणाली
  - 4) गिरिनार शिलालेख
- ब) टिपणे लिहा कोणतेही दोन  
टिप्पणियाँ लिखिए कोई भी दो। 10
- 1) पालि भाषेची उत्पत्ती
  - 2) पालि भाषा बोलणाऱ्यांचा प्रदेश
  - 3) ततिय धर्मसंगिती
  - 4) कलिंग युद्ध

\*\*\*\*\*